Faculty Name – **Dr. Kavita Sharma (GF JU)**
Department – Ancient Indian History Culture & Archaeology
Class – **M.A. 4th Semester** (एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर)
Subject – History of Medieval India (1605 to 1740 A.D.)
Course - 402

Unit -5 :-

मुगलों का पतन (Decline of Mughal)

भारत में मुगल राजवंश की स्थापना 1526 में बाबर द्वारा की गयी थी। सैद्वान्तिक रूप से इस राजवंश का अंत 1858 में हुआ। और बहादुरशाह जफर आखरी मुगल बादशाह थे। व्यावहारिक रूप से 1526 से 1707 तक मुगल साम्राज्य का पतन प्रारंभ होता है। 1748 के बाद तो मुगल सम्राट कभी मराठों, कभी निजाम, कभी पठानों और अंत में अंग्रेजों की कठपुतली मात्र ही रह गये उनकी वास्तविक सत्ता और वैभव का अंत हो चुका था।

मुगल साम्राज्य के पतन के लिये उत्तरदायी परिस्थितियों या कारणों का यदि विश्लेषण किया जाये तो हम पाते हैं कि औरंगजेब की नीतियां उत्तरकालीन मुगलों की अयोग्यता, मुगल दरबार की दलबंदी और षड़यंत्र, मराठों का बढ़ता प्रभाव, क्षेत्रीय राज्यों का उदय, आर्थिक कठिनाइयां, मुगल सेना का शक्तिहीन होना, नादिर शाह एवं अहमदशाह अब्दाली के अक्रमण आदि घटनाएं मुगल साम्राज्य के पतन के लिये उत्तरदायी हैं।

1. **औरंगजेब की धार्मिक नीति–** औरंगजेब का राजत्व सिद्धान्त और उसकी धार्मिक राजपूत एवं दक्षिण नीतियां मुगल साम्राज्य के पतन का महत्वपूर्ण कारण सि़द्ध हुयीं। औरंगजेब ने धार्मिक दृष्टि से जिस संकीर्ण दृष्णिकोण का परिचय दिया और असहिष्णुता की जिस धार्मिक नीति को अपनाया उसके कारण गैर मुसलमानों का बहुत बड़ा वर्ग मुगल शासन से असंतुष्ट होने लगा। मराठे, राजपूत, सिक्ख, और जाट मुगल साम्राज्य के विरोधी हो गये। औरंगजेब ने अकबर की नीति को बदल दिया। उसने हिन्दूओं पर फिर से यात्री कर और जजिया कर लगाया तथा उनके पूजा स्थलों को बर्वाद किया। उसने धर्म परिवर्तन को भी अधिक प्रोत्साहन दिया। औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता से उदार पंथी मुस्लिम सम्प्रदाय भी नाराज हो गये। औरंगजेब की इस असहिष्णु धार्मिक नीति से मुगल साम्राज्य की नींव कमजोर हुयी।

Dr Kavita Sharma

2. राजपूत एवं दक्षिण नीति– औरंगजेब की दक्षिण नीति उसके अन्तिम वर्षों में एक ऐसे दलदल के समान सिद्ध हुयी जिससे औरंगजेब निकल नहीं सका। उसने बीजापुर गोलकुन्डा को जीतकर तथा मराठा राजा शम्भाजी की हत्याकर लगभग पूरे दक्षिण भारत पर अधिकार कर लिया। परन्तु शम्भाजी की हत्या के बाद मुगल विरोधी मराठा संघर्ष में जो परिवर्तन हुआ उसने मुगल साम्राज्य के शक्ति और आर्थिक साधनों को सोख लिया। पहले राजाराम और फिर उनकी पत्नी ताराबाई के नेतृत्व में मराठों ने जो स्वतंत्रता संग्राम लड़ा उसने मुगल साम्राज्य की नींव को हिलाकर रख दिया। संताजी घोरपड़े एवं धनाजी जादव जैसे सेनापतियों के नेतृत्व में मराठों ने मुगल सम्राट और उनके बड़े बड़े सरदारों की नींद हराम कर दी। औरंगजेब की मृत्यू के समय भी मुगलों के विरूद्ध मराठों की आजादी का संघर्ष जारी था। औरंगजेब के लगातार दक्षिण में व्यस्त रहने से मुगल सेना की शक्ति क्षीण हुयी और उत्तर भारत में जाटों, राजपूतों बुन्देलों और सिक्खों की शक्ति बढ़ गयी।

राजा जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने राजपूतों के राज्य हड़प की जो नीति अपनाई उससे राजपूतों को भी मुगल साम्राज्य का दुश्मन बना दिया। राजपूतों की नाराजगी के परिणाम स्वरूप मुगल साम्राज्य की नींव को कमजोर कर दिया और उसके पतन की प्रबल सम्भावना होने लगी। औरंगजेब की इस कमजोर नीति के कारण साम्राज्य की अस्थिरता और बढ़ने लगी।

3. अयोग्य एवं निर्बल उत्तराधिकारी– औरंगजेब के बाद बहादुर शाह ज़फर को छोड़कर शेष सभी उत्तराधिकारी सम्राट अयोग्य, निर्बल एवं पतन के कारण रहे। वे मुगल दरबार तथा सरदारों की गुटबन्दी और षड़यन्त्रों को नियंत्रित करने में असफल रहे। अपनी कमजोरी और अयोग्यता के कारण औरंगजेब के ये निर्बल उत्तराधिकारी शक्तिशाली सरदारों पर आश्रित होते गये। उत्तरकालीन मुगल सम्राट अपने सरदारों के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गये। एक उत्तराधिकारी फर्रूखसियर लाल कुंवर नामक महिला के चक्कर में आकर

Dr Kavita Sharma

अपमानजनक ढंग से मार गया और शासन गवां दिया। मुहम्मदशाह रंगीला (1719–1748) की निर्बलता के कारण बंगाल, बिहार, उड़िसा, अवध, हैदराबाद और राजस्थान के कई राज्य स्वतंत्र हो गये थे। मुहम्मद शाह आलमगीर द्वितीय और शाह आलम मराठों या मुगल सरदारों की कठपुतली बन कर रह गये।

4. **स्वार्थी मुगल सरदार एवं गुटबन्दी–** मुगल साम्राज्य के विस्तार, समृद्धि और स्थायित्व में मुगल सरदारों और अमीरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। औरंगजेब के बाद के काल में योग्य सरदारों की कमी रही और जो कुछ योग्य सरदार रहे भी तो उन्होंने मुगल साम्राज्य को मजबूत करने के बजाय सम्राटों की निर्बलता और नैतिक पतन का लाभ उठाकर या तो दरबार में अपना प्रभाव बढ़ाया या अपने लिये स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली। सैयद भाइयों अब्दुल्ला खां और हुसैन अली जैसे सरदारें के स्वार्थों के कारण ही मुगल दरबार में गुटबंदी और षड़यत्रों को प्रोत्साहन मिला।

5. **मराठों का उत्तर की ओर विस्तार–** पेशवा बाजीराव प्रथम 1720–1740 के काल में उत्तर भारत में मराठा प्रभाव का तेजी से जो विस्तार शुरू हुआ उसने आने वाले कुछ वर्षों में मराठों को भारत की सबसे शक्तिशाली राजनीतिक सत्ता बना दिया। उत्तर में मराठा प्रभाव के विस्तार से मुगलों की शक्ति और प्रभाव कम होने लगा था। 1752 में हुयी मुगल मराठा संधि से ये पता चलता है कि मुगल सम्राट अपनी रक्षा के लिये मराठों पर आधारित हो चुके थे।

6. **सेना का गिरता स्तर एवं राष्ट्रीयता का अभाव–** उत्तरकालीन मुगल सम्राटों के काल में राजनीतिक एवं आर्थिक बिखराव के साथ सैनिकों की भक्ति भी अपने अमीरों और मनसबदारों के प्रति अधिक हो गयी थी एवं मुगल सम्राट भी पूरी तरह सरदारों की सेना पर निर्भर हो गये थे और उनमें राष्ट्रीयता का अभाव साफ साफ दिखाई देने लगा था। मुगल सेना के साथ औरतों नौकरों आदि का बड़ी संख्या में जाने की परम्परा थी लेकिन उनके खाने पीने एवं ठहरने की उचित व्यवस्था न होने कारण भी सेना का स्तर लगातार गिरने लगा था।

Dr Kavita Sharma

7. **आर्थिक दिवालियापन–** आर्थिक स्थिती पर शाहजहां के काल से विपरीत प्रभाव पड़ने लगा था। शाहजहां कालीन स्वर्णिम और संगमरमरी इमारतों तथा कन्धार के सैनिक अभियानो पर काफी बड़ी धनराशि खर्च हुयी थी। औरंगजेब के काल में होने वाले विद्रोहों तथा दक्षिण के संघर्ष का खराब प्रभाव कृषि, व्यापर एवं उद्योगों पर पड़ा। उत्तराधिकारियों के काल में संघर्षों, सत्ता षड़यत्रों, दरबारी उठापटक, चाटुकारिता एवं गुटबन्दी के कारण साथ ही बादशाहों की अय्याशीने मुगल साम्राज्य की आर्थिक स्थिती को बरबाद कर दिया। नादिर शाह एवं अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों ने तो रही सही कसर पूरी कर दी।

8. **नादिर शाह एवं अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण–** 1739 में अफगानिस्तान के शासक नादिर शाह बाद में 1754 सं 1761 तक अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने मुगल सम्राटों को आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्याधिक पतन की ओर बढ़ा दिया था। नादिरशाह के आक्रमण 1739 ने मुगल सम्राटों को लगभग कंगाल कर दिया था।

9. **नौसेना का अभाव–** नौसेना का अभाव भी मुगल साम्राज्य के पतन का एक कारण अंग्रेजों के सन्दर्भ में माना जा सकता है।

इस विश्लेषण के बाद कहा जा सकता है कि औरंगजेब की नीतियों के दूरगामी परिणाम उत्तरकालीन मुगलों की अयोग्यता, सरदारों की स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की महत्वाकांक्षाएं मराठों का प्रभाव, आर्थिक पतन, सेना का बदलता स्वरूप उनमें राष्ट्रीयता का अभाव तथा विदेशी आक्रमण कुछ ऐसे कारण थे जिनके कारण मुगल साम्राज्य का पतन होता चला गया।

Dr Kavita Sharma